पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 16.02.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-18 फाल्गुन-2081 दयानन्दाब्द 201 16 फरवरी से 28 फरवरी 2025 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.02.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

201वीं महर्षि दयानन्द जयंती सम्पन्न

महर्षि दयानन्द समग्रक्रान्ति के अग्रदूत थे –राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य
स्वामी दयानन्द ने वेदों को पुनः स्थापित किया –आचार्य गवेन्द्र शास्त्री

बुधवार 12 फरवरी 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती का 201 वाँ जन्मोत्सव ऑनलाइन आयोजित किया गया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द समग्रक्रांति के अग्रदूत थे उन्होंने तर्क की कसौटी पर सत्य को परखा फिर स्वीकार किया।उन्होंने लोगों के सोचने की दिशा ही बदल डाली।स्वामी जी ने कहा कि कोई कितना ही करे परंतु स्वदेशी राज्य सर्वोत्तम है यह कह कर राष्ट्रवाद की अलख जलायी।स्वामी जी से प्रेरणा लेकर हज़ारों नौजवान आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। वैदिक विद्वान आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने महर्षि दयानन्द को वेदों वाला ऋषि कहा जाता है स्वामी जी ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। आर्य नेता राजेश मेहंदीरता ने कहा कि स्वामी जी ने जात पात ऊंचनीच भुला कर समाज को जोड़ने का कार्य किया।आर्य समाज उनके आदर्शों को ज़न ज़न तक पहुंचाने का सराहनीय कार्य कर रहा हैप्महर्षि दयानन्द एक क्रांतिकारी सन्यासी थे जिन्हें 201 वर्ष बाद भी याद किया जा रहा है। अध्यक्षता करते आर्य नेता ओम सपरा ने कहा कि स्वामी जी का लिखा हुआ सत्यार्थ प्रकाश एक बार अवश्य पढ़ो और स्वयं को जान लो अपनी संस्कृति को पहचान लो।उन्होंने कहा कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सिद्धान्त आज भी प्रासांगिक हैं और उस पर चलने की आवश्यकता है।स्वामी दयानन्द के आदर्शो को अपनाने से ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।आर्य जनों को विश्व को बदलने का कार्य करना है। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने कहा कि स्वामी जी ने नव जागरण का आह्वान किया। गायिका कौशल्या अरोड़ा,जनक अरोड़ा, सुधीर बंसल, रविन्द्र गुप्ता, विमल चड्ढा, ललिता धवन,चन्द्र कांता आर्य,कुसुम भंडारी आदि ने मधुर भजन प्रस्तुत किए। यह कोराना काल में 700वां वेबिनार सम्पन्न हुआ।

स्वामी दयानन्द जयंती पर भारत के माननीय प्रधानमन्त्री का सन्देश

Narendra Modi
@narendramodi

महान चिंतक, समाज सुधारक और प्रखर राष्ट्रवादी महर्षि दयानंद सरस्वती जी को उनकी जन्म-जयंती पर कोटि-कोटि नमन। वे जीवनपर्यंत समाज को अज्ञानता, अंधविश्वास और आडंबर के खिलाफ जागरूक करने में जुटे रहे। शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के साथ-साथ भारतीय विरासत और संस्कृति के संरक्षण के लिए उनके प्रयास देशवासियों को सदैव प्रेरित करते रहेंगे।

Translate post

2:12 PM · Feb 12, 2025 · **231.7K** Views

सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण

अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में संगीत संध्या

''एक शाम शहीदों के नाम''

रविवार 23 मार्च 2025, शाम 4 बजे से रात्री 7.30 बजे तक
स्थानः आर्य समाज डी ब्लॉक, आनंद विहार, पूर्वी दिल्ली
गायक कलाकारः नरेन्द्र आर्य सुमन व प्रवीण आर्य पिंकी
ऋषि लंगर रात्री 7.30 बजे

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

निवेदक

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	विनोद खुल्लर	दीपक वर्मा	दिनेश सेठ
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	प्रधान समाज	मन्त्री समाज	कोषाध्यक्ष समाज

आर्यसमाज के महाधन

स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सन् 1891 के हरिद्वार कुम्भ मेले में प्रथमवार वैदिक धर्म का प्रचार

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द (1825–1883) ने अपने जीवन काल में सन् 1867 और 1879 के हरिद्वार के कुम्भ मेलों में घर्म–प्रचार किया था। सन् 1883 में उनका देहावसान हुआ। देहावसान के 8 वर्ष बाद सन् 1891 में हरिद्वार में कुम्भ का मेला पुनः आया। तब तक आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अतिरिक्त किसी अन्य प्रादेशिक सभा का गठन नहीं हुआ था। महात्मा मुंशीराम जी उन दिनों पंजाब में जालन्धर आर्यसमाज के प्रधान थे। प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी शायद आप ही थे। आपने अपने विद्यार्थी जीवन में लाहौर एवं जालन्धर में प्रभातफेरी द्वारा तथा नगर के चौक आदि स्थानों में अपने मित्रों के सहयोग से सभायें करके प्रभावशाली प्रचार किया था। प्रचार में आपकी गहरी लगन थी। इसके लिये आपने अपने वकालत के व्यवसाय की भी उपेक्षा की। प्रचार का निश्चय करके आपने हरिद्वार के कुम्भ मेले में धर्म प्रचार करने के लिये वहां जाकर व्यवस्था की। उनकी योजना सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस आयोजन में पं. लेखराम सहित आर्यसमाज के अनेक प्रसिद्ध सन्यासी एवं विद्वान भी प्रचारार्थ आये थे जिनमें पं. आर्यमुनि जी, स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी तथा स्वामी नित्यानन्द जी आदि सम्मिलित हैं। पं. सत्यदेव विद्यालंकार लिखित स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी में कुम्भ मेले में स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से जो प्रचार हुआ उसका वर्णन उपलब्ध होता है। पाठकों के ज्ञानवर्धन हेतु हम उसे प्रस्तुत कर रहे हैं। पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी लिखते हैं कि पश्चिमोत्तरीय भारत में हरिद्वार बहुत बड़ा तीर्थ है और भारत के पहिली श्रेणी के तीर्थों में उसकी गणना है। इसलिए वहां छोटे मोटे मेले तो वर्ष में तीन सौ साठ दिन ही होते रहते हैं। पर बारह वर्ष बाद आने वाला कुम्भ का महामेला अद्वितीय होता है। उससे उतर कर उसके छः वर्ष बाद होने वाला अर्धकुम्भी का मेला होता है। ऋषि दयानन्द ने सम्वत् 1936 में ऐसे अवसर पर ही हरिद्वार में पाखण्ड–खण्डिनी पताका गाड़ कर अपने महान् और विशाल मिशन की विजय–दुंदुभि बजाई थी। ऋषि के अनुव्रती इस गौरवपूर्ण घटना को भला कब भूल सकते थे? ऋषि दयानन्द के देहावसान के बाद सम्वत् 1948 (सन् 1891) में पहले पहल हरिद्वार के कुम्भ का यह महामेला आया। आर्यसमाजों को सुस्त देख कर मुंशीराम जी ने इस अवसर पर प्रचार करने के लिये (अपने प्रसिद्ध पत्र सद्धर्म) प्रचारक द्वारा आर्य जनता से अपील की। अमर शहीद पंडित लेखराम जी आर्यमुसाफिर उन दिनों कलकत्ता में थे। आपने वहीं से आप की अपील का समर्थन किया। (सद्धर्म) प्रचारक द्वारा आन्दोलन होने पर प्रतिनिधि सभाओं ने भी होश संभाला। आर्य जनता प्रचार का सब भार उठाने के लिए तय्यार हो गई। इस प्रचार में धन की कमी की कोई शिकायत नहीं रही। पर, हरिद्वार पहुंच कर प्रबन्ध की सब जिम्मेवारी उठाने के लिए कोई तय्यार न हुआ। मुंशीराम जी को ही एक मास पहिले वहां जाकर डेरा जमाना पड़ा। तीन दिन बाद कलकत्ता से लेखराम जी भी पहुंच गये।

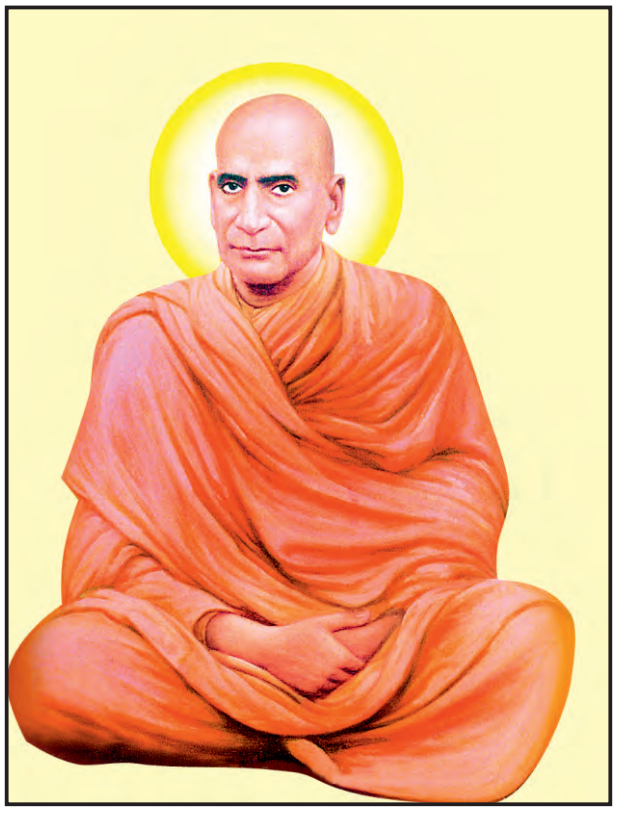

ऐसे प्रचार का संभवतः वह पहिला ही अवसर था। इसलिए उपदेशकों, स्वामियों और अन्य सब साधनों की कमी न होने पर भी निराशा का कुछ कम सामना नहीं करना पड़ा। पौराणिकता के गढ़ में वैदिक धर्म का सन्देश सुनाना कोई साधारण काम नहीं था। इसीलिए जालन्धर से चलने के बाद मुंशीराम जी को सहारनपुर और रुड़की में निराशा की बातें सुनने को मिली। पर मुंशीराम जी सहज में निराश होने वाले नहीं थे। हरिद्वार पहुंच कर दो–तीन दिन में ही उन्होंने सब व्यवस्था ठीक कर दी। पर घर से पुत्र की बीमारी का तार आने से उनको शीघ्र ही लौटना पड़ा। लौटने से पहले उन्होंने पंडित लेखराम जी, सुकेत के राजकुमार जनमेजय और काशीराम जी आदि को सब व्यवस्था अच्छी तरह समझा–बुझा दी। पंडित लेखराम जी के अलावा स्वामी आत्मानन्द जी, स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी, स्वामी पूर्णानन्द जी, ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी, ब्रह्मचारी ब्रह्मानन्द जी और पंडित आर्यमुनि जी आदि भी हरिद्वार पहुंच गये थे। भजनों और व्याख्यानों के साथ–साथ शंका–समाधान भी खूब होता था। कोई मार्के का शास्त्रार्थ तो नहीं हुआ, किन्तु प्रचार की खूब धूम रही। वैदिक–धर्म का सन्देश हजारों नर–नारियों तक पहुंच गया। आर्यसमाज का परिचय भी लोगों से अच्छा हो गया। पंडित लेखराम जी ने इस प्रचार की रिपोर्ट को स्वयं लिखकर ट्रैक्ट के रूप में छपवा कर प्रकाशित किया। मुंशीराम जी को इस प्रचार से सबसे अधिक लाभ यह हुआ कि पंडित लेखराम जी का उनसे बहुत घनिष्ठ प्रेम हो गया। दोनों आपस में एक दूसरे के बहुत समीप हो गये। आर्यसमाज को भी इस घनिष्ठता से बहुत बड़ा लाभ हुआ। दोनों की घनिष्ठता से आर्यसमाज में एक शक्ति पैदा हो गई, जिसने गृह–कलह के संकट काल में आर्यसमाज को विचलित होने से बचाने में जादू का काम किया। इसके अलावा आर्यसमाज को प्रत्यक्ष लाभ यह मिला कि कुम्भ पर आर्यसमाज के प्रचार–कार्य का वह सिलसिला शुरू हो गया, जो अब तक भी जारी है। सम्वत् 1960 (सन् 1903) में इसी भूमि के पास फिर प्रचार हुआ और सम्वत् 1962 में वह सारी भूमि पंजाब–प्रतिनिधि सभा के नाम से खरीद ली गई। उसके बाद सम्वत् 1972 (सन् 1915) में वहां सार्वदेशिक सभा की ओर से प्रचार हुआ और सम्वत् 1984 (सन् 1927) में भी प्रचार की धूम रही। अर्धकुम्भी पर भी इसी प्रकार सदा प्रचार होता रहा। कुम्भ और अर्धकुम्भी पर होने वाले इस सब प्रचार का सारा श्रेय मुंशीराम जी को ही है, जो (सद्धर्म) प्रचारक द्वारा सदा इस अवसर पर आर्यसमाज को कर्तव्य–पालन के लिए जगाते रहते थे। इस समय यह भूमि मायापुर की वाटिका के नाम से प्रसिद्ध है। गुरुकुल के गंगा के इस पार होने पर यह भूमि गुरुकुल के यात्रियों के बहुत काम आती थी और गुरुकुल की यहां एक छावनी–सी पड़ी रहती थी। यहां पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी द्वारा लिखित विवरण समाप्त होता है। पं. सत्यदेव विद्यालंकार जी ने जो जानकारी दी है वह ऐतिहासिक महत्व की है। इस महत्व को दृष्टिगोचर कर ही हमने इसे प्रस्तुत किया है। हम आशा करते हैं पाठक इस जानकारी से लाभान्वित होंगे।

–196 चुक्खूवाला–2, देहरादून–248001, फोनः 9412985121

भार्गव दंपति को वर्षगांठ की बधाई व सूर्य प्रकाश खत्री को विधायक बनने पर बधाई

परिषद के अपार सहयोगी **श्रीमती प्रीति व महेश भार्गव की 25वीं वर्षगांठ पर** भव्य समारोह आर्य समाज आनंद विहार पूर्वी दिल्ली में आयोजित किया गया। चित्र मे राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, यशोवीर आर्य, डा. वागीश आचार्य, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार अभिनंदन करते हुए।

द्वितीय चित्र में दिल्ली तिमारपुर विधानसभा के चुनाव में विधायक चुने जाने पर श्री सूर्य प्रकाश खत्री एडवोकेट को हार्दिक बधाई देते अनिल आर्य, ओम सपरा, अरविंद माँगा, भारत भूषण अब्बी, गोपाल आर्य आदि।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कौन थे?

—डॉ. विवेक आर्य

एक ऐसे ब्रह्मास्त्र थे जिन्हे कोई भी पंडित, पादरी, मोलवी, अघंर, ओझा, तान्त्रिक हरा नहीं पाया और न ही उन पर अपना कोई मंत्र तंत्र या किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव छोड़ पाया। ❑ एक ऐसा वेद का ज्ञाता जिसने सम्पूर्ण भारत वर्ष में ही नहीं अपितु पूरी दुनियां में वेद का डंका बजाया था। ❑ एक ऐसा ईश्वर भक्त, जिसने ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अपना घर त्याग ही कर दिया। ❑ एक ऐसा महान व्यक्ति जिसने लाखों की संपत्ति को ठोकर मार दी पर सत्य के राह से विचलित नही हुआ। ❑ एक ऐसा दानी जिसने अपने गुरु दक्षिणा मे अपना सम्पूर्ण जीवन ही दान दे दिया। ❑ एक ऐसा क्रान्तिकारी जिसने सबसे पहले आजादी का बिगुल फूकँ न जाने कितने लोगो के अन्दर क्रान्ति की भावना को पोषित किया। ❑ एक ऐसा स्वदेश भक्त जिसने सबसे पहले स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरी कहाँ और अंग्रेजो के सामने ही उनका राज्य समस्त विश्वसे नष्ट होने की बात कही। ❑ एक ऐसा स्वदेशी रक्षक जिसने सबसे पहले स्वदेशीय राज्य को सर्वोपरी कहा। ❑ एक ऐसा गौरक्षक व गौ प्रेमी जिसने सबसे पहले गौ रक्षा हेतू गौरक्षणी सभा बनाई व इसके नियमो का प्रतिपादन किया। ❑ एक ऐसा निडर व्यक्ति जिसने निर्भीक होकर समाज की कुप्रथाओ, कुरितीयो पर प्रहार किया। ❑ एक ऐसा व्यक्ति जिसने कभी भी सत्य से समझौता नही किया। ❑ एक ऐसा धर्म धुरंधर जो केवल वेद का ही नही अपितु कुरान, पुराण, बाईबिल, त्रिपिटिक, व अन्य मजहबी व मंत मतान्नतरो वालो के ग्रन्थो का ज्ञान था। ❑ एक ऐसा सत्य का पुजारी का जो अपनी हर बात डंके की चोट पर कहता था। ❑ एक ऐसा धर्म धुरन्धर जिसने सभी पाखंडो का खंडन कर सत्य का राह दिखाया। ❑ एक ऐसा धर्म धुरंधर जिसने इस देश का धर्मान्तरण (ईसाईयत व ईस्लामीकरण) होने के केवल रोका ही नही वरन् शुद्धि व घर वापसी द्वारा देश का धर्मान्तरण होने से रोका। ❑ एक ऐसा सत्यनिष्ठ जिसे किसी प्रकार के लोभ व लालच विचलित नही कर पाये। ❑ एक ऐसा सन्यासी जो पत्थरो, जूतो की मार से विचलित न हुआ वरन् उसके संकल्प और भी मजबूत हुए। ❑ एक ऐसा ऋषि जिसने पुनः यज्ञ , योग व पुरानत ऋषि महर्षियो के ज्ञान को पुनः स्थापित कराया। ❑ एक ऐसा ज्ञानी जिसने ऋषि कृत पाणिनि, जैमनि, ब्रह्मा, चरक , सुश्रुत आदि ग्रन्थों का उद्धार किया। ❑ एक ऐसा ऋषि जिसने ऋषियो के नाम से बनाये सभी ग्रन्थों का भांडा फोड़ा व हमारे ऋषियो के नाम पर लगे दाग को मिटाया। ❑ एक ऐसा समाज सुधारक जिसने सबसे पहले सती प्रथा, बाल विवाह, जैसे कुप्रथाओ पर प्रहार कर समस्त भारत मे नारी की प्रतिष्ठा को समाज मे पुनः स्थापित कराया। ❑ एक ऐसा समाज सुधारक ने माँसाहार व शाकाँहार मे भेद स्पष्ट कर समाज को पुनः शाँकाहार के रास्ते पर चलाया। ❑ एक ऐसा साहसी व्यक्ति जिसके साहस अपमान, तिरस्कार से कम नही हुए बल्कि और भी दृढ़ हुए। ❑ एक ऐसा समाज सुधारक जिसने केवल भारत के लिए ही नही अपितु विश्व के कल्याण की भावना से निस्वार्थ काम किया ।

धन्य है तुझे ऋषिवर देव दयानंद! तेरे उपकार न जाने कितने हैं ,, लाखों पत्थर खा कर के भी, लोगों द्वारा दिए गए कई बार ज़हर के बावजूद भी तू एक बार भी अपने पथ से नहीं डगमगाया! हे आर्यो मेरी लेखनी मे इतने शब्द नही जो मै महर्षि जी के उपकारो को लिख सकूँ , गागर मे सागर नही भरा जा सकता। हे ऋषिवर आपको शत—शत नमन।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव

1. 12 फरवरी को ऋषिवर दयानन्द सरस्वती जी का परम दिव्य जन्मोत्सव एक प्रेरणापर्व का महोत्सव है।

2. महामेधावी मूलशंकर का दिव्यतम जन्म पूज्या माता अमृतबाई जी एवं पूज्य पिता कर्षन जी के धर्मनिष्ठ, शिवभक्त, यज्ञप्रेमी, संस्कृत संस्कृतिसंरक्षक, संस्कारपरायण एवं वेदानुरागी कुलीन, विप्रपरंपरा संपोषित परिवार में जेष्ठ एवं श्रेष्ठ सुपुत्र के रूप में टंकारा की पावन धरा में हुआ था।

3. आप जन्म से ही विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न, विचारशील, जिज्ञासु, सत्यान्वेषक, दृढ़प्रतिज्ञ, निरासक्त, निर्मोही, मृत्यु—मीमांसक, शिवसंकल्प संधारक एवं वैराग्यव्रतधारी ब्रह्मचारी थे।

4. मूलशंकर से शुद्धचौतन्य फिर दयानन्द सरस्वती नाम की यह त्रिवेणी त्रिविध अर्थों और भावों से विभूषित होकर विश्व में विशुत है।

5. गुरुजनों (पूर्णानन्द जी, ज्वालानन्द जी, शिवानन्द जी, भवानीगिरि जी, विरजानन्द जी आदि) की कृपा एवं अनुकम्पा पाकर योगविद्या और शब्दविद्या में परम निष्णात हो गये। अपने गुरुओं के प्रति सेवा और कृतज्ञता का भाव अतिविशिष्ट था।

6. गायत्री मंत्र जपसाधना, अष्टांग योगसाधना और ब्रह्मचर्य के प्रबल प्रताप से तन कुन्दन, मन चन्दन, प्राण पावन और आत्मा परमात्मा में निमग्न थी।

7. देहासक्ति से निरासक्ति, धर्मार्जन में अनुरक्ति, परोपकार में प्रवृत्ति, वेदप्रचार में प्रीति, मानवसेवा में संसिक्ति, भारतीय गौरवगान में गीति, नर—नारी के निर्माण में नियुति और ओंकारोपासना में सदा स्तुति थी।

8. उनका पावनतम जीवन दैवीयगुणों से समलंकृत, महाज्ञान से आलोकित, महाभक्ति से विभासित, महाकर्मों से संपूरित, मानवीयमूल्यों से महिमामण्डित और गुणसागर से निमज्जित था।

9. उनके उपदेश और आचरण में अनुकूलता, वाणी और व्यवहार में अभिन्नता, लेखन और वाचन में पारंगता, कथनी और करनी में एकता, शास्त्रचिंतन में निपुणता, ग्रन्थलेखन में प्रवीणता, उपदेश में सत्य वादिता, पद और प्रतिष्ठा में शून्यता, कार्य में दक्षता, परसेवा में सहभागिता और लौकिक एवं अलौकिक महागुणों से जीवन सदा सुरभित था।

10. ऋषिवर की गुणगाथा का संकीर्तन शब्दातीत है। ऋषिवर के विराट व्यक्तित्व और कर्तृत्व से प्रेरणा पाकर सदा सुपथ के अनुगामी बनें।

दयानन्दो दयानन्दः, दया—आनन्दनन्दितरू।
दयावृष्टिं सदा कृत्वा, देवयाने गतो ननु।।

— आचार्य चन्द्रशेखर शर्मा (ग्वालियर)

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 700वां वेबिनार सम्पन्न

'क्या मृत्यू निश्चित है' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

मृत्यू की डोर विधाता के हाथ में है –सुधीर बंसल

सोमवार 10 फरवरी 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'क्या मृत्यू निश्चित है' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया।यह कोरोना काल से 699 वाँ वेबिनार था। वैदिक प्रवक्ता सुधीर बंसल ने कहा कि मृत्यु एक सच है जिसे झुठलाना किसी के वश में नहीं है।मृत्यु एक सरिता है जो अनवरत बहती है।वह बात अलग है कि मृत्यु, मृत्यु में फर्क होता है। उन्होंने कर्म प्रधानता पर जोर देते हुए बताने की कोशिश की कि वीर एवं धीर–गंभीर व्यक्ति मृत्यु पर विजय पाने के लिए सर्व–प्रथम भय–मुक्ति के मार्ग की उपासना में रत्त रहता है और विशेष रूप से जीवात्मा जो इस जड़ रूपी देह को अपनी आत्म–पुञ्ज की लौ से हर क्षण चौतन्य बनाये रखती है, मुख्यतः चार प्रकार के कर्म उसके जीवन के इर्द–गिर्द बने रहते हैं, यथा सामान्य कर्म, अकर्म, विकर्म और सुकर्म। आर्य–समाज के नवम् नियम का हवाला देते हुए प्रवक्ता ने बताया कि 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए, यही सुकर्म है, और यही सर्वश्रेष्ठ सदाचार समाज और सामाजिक धार्मिक उत्थान में संकल्पित जीवन कभी मृत्यु से भयभीत नहीं होगा। शरीर नश्वर है। आत्मा अज़र–अमर है। आत्मा कभी नष्ट नहीं होती। ये देह जो आत्मा के लिए कवच है वह उस जीव द्वारा अपने जीवन में किये गये श्रेष्ठ कर्मों के लिए इहलोक से परलोक गमन पश्चात् भी सदैव याद किया जायेगा और वस्तुतः उसके कर्म ही समाधि बनकर सदैव उसकी यश कीर्ति व्योम में, चारों दिशाओं में फैल कर वातावरण को सुगन्धित बनाये रखेंगे। अपना पक्ष प्रस्तुत करते हुए प्रवक्ता ने इतिहास में समाहित उन महान विभूतियों के कुछ उदाहरण भी दिये जिन्हें उनके सद्कार्यों के लिए सैकड़ों वर्षों बाद भी याद किया जाता है और आगे भी याद किया जाता रहेगा। आर्य–समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के आर्ष पुरुषार्थ को कौन नहीं जानता और उनका प्रयाण, यही मृत्यु पर विजय है, ऐसा हर आर्य के लिए प्रेरणा संदेश है। स्वस्थ और दीर्घायु हेतु प्रसंगानुसार युवकों, तरुणियों, किशोर–किशोरियों का मार्ग–दर्शन करते हुए उन्हें सही अर्थों में ब्रह्मचर्य का पालन करने का संदेश दिया। गृहस्थ आश्रम जैसी महत्वपूर्ण विधा में रहते हुए, सांगोपांग पालन करते हुए उम्र के एक पड़ाव पर आकर ऋतुगामी रहना भी श्रेष्ठ ब्रह्मचर्य है, ऐसे मनुष्य को कभी मृत्यु का भय नहीं रहेगा। आधि व्याधि, कष्ट, क्लेश, संताप, ईर्ष्या, अहंकार एवम् ताप रहित जीवन के हम सभी अनुगामी बनें, इन नकारात्मक तत्वों से वैराग्य रखें तो मनुष्य अवश्य जीवन की वैतरणी पार कर लेगा। शरीर की मृत्यु तो समय आने पर निश्चित है, वह डोर विधाता के हाथ में है पर शेष कर्म तो इस धरा पर उस जीवात्मा के हाथ में ही है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री रजनी गर्ग व अनिता रेलन ने भी अपने विचार रखे। कुशल संचालन परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने किया। प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका पिंकी आर्या, कुसुम भंडारी, प्रवीना ठक्कर, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, रविन्द्र गुप्ता, राजश्री यादव, उषा सूद आदि के मधुर भजन हुए।

वसंत पंचमी का महत्व विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

वसंत जीवन में श्रेष्ठ बनने का संदेश देती है –आचार्या श्रुति सेतिया

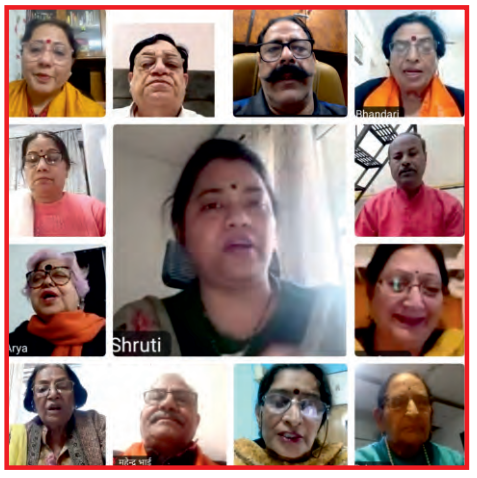

सोमवार 3 फरवरी 2025,केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 'बसंत पंचमी का महत्व' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 698 वाँ वेबिनार था। वैदिक विदुषी श्रुति सेतिया ने कहा है भारत पर्वों,उत्सवों का देश है।यहां साल के बारह महीनों में कोई ना कोई उत्सव एवं पर्व मनाए जाते हैं। पृथ्वी का यह एक ऐसा भूभाग है जहां वसंत,ग्रीष्म,वर्षा,शरद,शिशिर और हेमंत छः ऋतुएं होती हैं वैसे तो सभी ऋतुओं का अपना अपना महत्व है,परंतु वसंत ऋतु का अपना अलग विशिष्ट महत्व है।इसलिए वसंत ऋतुओं का राजा कहलाता है। इसमें प्रकृति का सौंदर्य सभी ऋतुओं से बढ़ कर होता है।जब सरसों पीली होकर धरती पर अपना स्वर्णिम रूप बखेर देती है, गेहूं की बालियां खेतों में लहराने लगती हैं, धरती पर बहार आ जाती है और मानव मन मदमस्त हो जाता है। बसंत ऋतु का आगमन माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी से माना जाता है। ऋतुराज वसंत का बड़ा महत्व है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह ऋतु बड़ी ही उपयुक्त है।बसंत पंचमी के दिन ज्ञान की अधिष्ठानी सरस्वती देवी का जन्म हुआ था। इसलिए इस दिन सरस्वती की पूजा अर्चना की जाती है। ये बुद्धि प्रदाता है। यह दिन हमें पृथ्वीराज चौहान की भी याद दिलाता है।सिखों के दसवें गुरु,गुरु गोविंद सिंह जी का विवाह भी इस दिन हुआ था। बसंत पंचमी का लाहौर निवासी वीर हकीकत राय से भी गहरा संबंध है। धर्म पर बलिदान होने वाले वीर हकीकत राय की याद में यह दिवस मनाया जाता है।बसंत पंचमी के दिन विद्यालयों में सरस्वती पूजन किया जाता है एवं ज्ञान की अधिष्ठानी देवी सरस्वती के प्रति अपनी कृतज्ञता एवं सम्मान व्यक्त किया जाता है।मां सरस्वती का सुंदर विग्रह स्वरूप हमें जीवन को श्रेष्ठ और सुमंत बनाने की प्रेरणा देता है।मां सरस्वती के चार हाथ ओर उसमें धारण की हुई वस्तुएं मूक रूप से हमें प्रेरणा देती हैं कि हम स्वच्छता,स्वाध्याय,सादगी और श्रेष्ठता को अपने जीवन में धारण करें।हम श्रेष्ठ साहित्यों का अध्ययन करें और जीवन में ज्ञान प्राप्त कर उसे श्रेष्ठ बनाएं।यदि हम इन गुणों को आत्मसात कर सकें तो निश्चित रूप से हमारा जीवन भी बसंत ऋतु की तरह सुंदर और सुहावना हो जाएगा और सफलता रूपी पल्लवों से पुष्पित ओर सुशोभित होगा।इस प्रकार सनातन संस्कृति का यह पर्व हमें चहूं ओर से अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संदेश देता है। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री डॉ. कल्पना रस्तोगी व अध्यक्ष कुसुम भंडारी ने भी अपने विचार रखे।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए वीर हकीकत राय को युवाओ के लिए प्रेरणा स्रोत बताया।प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका पिंकी आर्य, संतोष धर, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा, अनिता रेलन आदि ने मधुर भजन सुनाए।

जहां होता है भरपूर काम और प्रभु का गुणगान आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474
से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970